उत्तराखण्ड में पुर्नजागरण की लहर में पत्रकारिता का महत्व

डॉ0 रंजना रावत
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास
डी0 ए0 वी0 (पी0जी0) कॉलेज,
देहरादून।

पूर्व में नेपाल, उत्तर में तिब्बत, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश, सहारनपुर, दक्षिण में रूहेलखण्ड को स्पर्श करने वाला उत्तराखण्ड भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टि से एक सम्पूर्ण तथा स्वतन्त्र इकाई है। उत्तराखण्ड के इतिहास पर नजर डालने से ज्ञात होता है कि उत्तराखण्ड की संरचना में कोल, मुंड, किरात, मंगोल, खस, द्रविण, आर्य आदि जातियों का योगदान रहा है। कालान्तर में कत्यूरी राजवंश की स्थापना से पूर्व कुणिन्दों व पौरव वर्मन शासकों द्वारा शासन किया जाना प्रमाणित होता है। कत्यूरियों का शासनकाल 850–1050 ई0 तक माना जाता है।[1] तत्पश्चात दो प्रमुख राजवंशो कुमायुँ में चंद और गढ़वाल में गढ़वंश (पंवार या परमार) ने शासन किया। कुमायुँ की चंद सत्ता का अंत गोरखों ने 1790 ई0 में किया और 1804 ई0 में गढ़शासक प्रद्युम्नशाह को परास्त कर अपने अधिकार क्षेत्र में किया। गोरखों के क्रूर निरंकुश एवं अत्याचारी शासन का अंत 1815 में अंग्रेजों द्वारा किया गया।[2] परमारों ने एक दशक तक विस्थापित रहकर 1815 ई0 में पुनः आधा राज्य पा लिया।[3] 1815–1947 ई0 तक उत्तराखण्ड में दो प्रकार के प्रशासन रहे एक टिहरी रियासत में राजा का शासन दूसरा शेष उत्तराखण्ड में कमिशनर के अधीन।[4]

कालान्तर में उत्तराखण्ड में 1815–1857 ई0 का दौर शान्ति का दौर माना जाता है परन्तु प्रशासन के विरूद्ध असन्तोष का बीजारोपण भी होने लगा था जो तत्कालीन कवियों की रचनाओं में परिलक्षित होने लगता है।[5] यहाँ की आम जनता के परम्परागत अधिकारों को छीनने, अन्य शोषक प्रथाओं को लादने के कारण जनता असंतुष्ठ होकर भारत में हो रहे पुर्नजागरण परिवर्तन व स्वतन्त्रता के परिप्रेक्ष्य से प्रभावित होकर उदार जागृति की शुरूआत करने लगी। उत्तराखण्ड में 1857 ई0 के विद्रोह के समय और उसके पूर्व भी औपनिवेशिक शासन की अवमानना के प्रमाण मिलते हैं।[6] उत्तराखण्ड में औपनिवेशिक शिक्षा का प्रारम्भ 1856–1884 ई0 में रैमजे युग में हुआ तभी पुनर्जागरण की लहर यहाँ पहुँच सकी। इसी समय यहां उदार जागृति की आधारशिला रखने वाले तत्वों – स्थानीय संगठन तथा स्थानीय पत्रकारिता का आर्विभाव हुआ। उत्तराखण्ड में प्रथम संगठन का श्रेय 'डिबेटिंग क्लब' (1870, अल्मोड़ा) को तथा प्रथम पत्र होने का श्रेय 'समय विनोद' (1868, नैनीताल) को जाता है तभी 1871 में 'अल्मोड़ा अखबार' का प्रकाशन भी महत्वपूर्ण था।[7]

किसी समाज में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत करने में सामान्य जनजीवन को प्रभावित करने में तथा विचार–विमर्श द्वारा दृढ़ता प्रतिपादित करने में समाचार पत्रों का अभूतपूर्व योगदान रहता है।[8] इसीलिए उत्तराखण्ड में क्षेत्रीय समस्याओं के प्रति जागृत करने और राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का कार्य सर्वप्रथम समाचार पत्रों के माध्यम से ही किया गया।

उत्तराखण्ड के प्रथम समाचार पत्र 'विनोद' (जयदत्त जोशी, नैनीताल) के विभिन्न अंकों में ब्रिटिश नौकरशाही की निंदा, दमनकारी नीतियों, कम वेतन दिये जाने, बिना वजह पीटने,

अविश्वास करने, शोषण आदि पर चिंता व्यक्त की गई थी।[9] 1871 में 'अल्मोड़ा अखबार' बुद्धिबल्लभ पंत के संपादकत्व में आरम्भ हुआ। इस अखबार ने अंग्रेज शासको का ध्यान स्थानीय समस्याओं के प्रति आकर्षित किया। इस पत्र ने अंग्रेजी अत्याचारों से त्रस्त पर्वतीय जनता की मूक वाणी को अभिव्यक्त करना सिखाया। इसके मुख्य विषय कुली बेगार, जंगल बंदोबस्त, बालशिक्षा, महाद्यनिषेध, स्त्री अधिकार आदि थे। इस पत्र के विभिन्न अंकों में कर्मचारियों के दुर्व्यवहार, अकाल के समय सरकारी दौरों का विरोध, प्रेस एक्ट का विरोध, भारतीय नौकरो पर दोहरी नीति आदि का विस्तृत विवेचन किया गया जिसके कारण कालान्तर में सरकार द्वारा मांगी गई सुरक्षा राशि न जमा कर पाने के कारण इसे बन्द कर दिया गया।[10]

कूर्मांचल समाचार (1893–1994 अल्मोड़ा) गढ़वाल समाचार (1902 लैंसडाउन, 1913 दोगड़ा) गढ़वाली (1905–1952 देहरादून) तथा बाजार बंधु (1913 अल्मोड़ा) ने अपने लेखों में शासन की गलत नीतियों का विरोध किया। ये समाचार पत्र अल्पजीवी रहे। इनमें सड़कों के शीघ्र निर्माण, गढ़वाली पाठशालाओं में उर्दू शिक्षा की आवश्यकता तथा गढ़वाली विद्यार्थियों की अधोगति पर भी टिप्पणियां की गई।[11] सम्पादकीय अनुभव के कारण पं0 गिरिजादत्त नैथानी द्वारा सामाजिक, शैक्षणिक व धार्मिक सुधारो की ओर प्रशासन और जनता का ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया गया।

पत्रकारिता के लिए समर्पित नैथानी ने 1912 में दुगड्डा में प्रेस (छापाखाना) स्थापित किया जो कालान्तर में स्टोवल प्रेस के नाम से जाना गया।[12] 1905 में गढ़वाल के प्रथम सामाजिक सुधारवादी संगठन (गढ़वाल यूनियन) के तत्वाधान में गढ़वाल मासिक पत्र का आरम्भ देहरादून से किया गया जो गोखले की नरम दलीय नीति से प्रभावित था। इसने स्थानीय सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक–शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने का भरसक प्रयास किया। इस समाचार पत्र ने कन्या विक्रय बेगार तथा वनकष्टों सहित सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त किये जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए जन भावनाओं को उभारने में विशेष सफलता प्राप्त की। गढ़ी सड़क आन्दोलन, अछूतोद्धार, डोला पालकी, दलित शिक्षा, दलितों को सेना में स्थान देना का समर्थन किया।[13] 1913 में पौड़ी से प्रकाशित विशाल कीर्ति मासिक पूर्णतः सामाजिक सुधारों पर केन्द्रित था। इस पत्र ने विशेषकर गढ़वाली भाषा के गद्य–पद्य साहित्य के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया।[14] 1917 में प्रकाशित 'पुरूषार्थ मासिक' पत्र विशुद्ध राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत था और स्थानीय चेतना को राष्ट्रीय चेतना की मूलधारा के साथ जोड़ने हेतु सफल प्रयास था।

कालान्तर में 1913 में बद्रीदत्त पांडे के सम्पादक बनने के बाद अल्मोड़ा समाचार में बेगार, जंगलात के कष्टों, स्थानीय नौकरशाही की निरंकुशता, स्वराज आदि विषयों पर कुमायुँ परिषद् के प्रमुख नेताओं मोहन जोशी, हरगोविन्द पंत, गोविन्द बल्लभ पंत, लक्ष्मीदत्त शास्त्री के आक्रामक लेख प्रकाशित होने लगे। इनका मानना था कि 'भारतीय आन्दोलन वैध है'। स्थानीय नौकरशाही की कटु आलोचना करने के कारण यह पत्र 1918 में बंद हो गया। पुनः 1918 में शक्ति (संपादक बद्रीदत्त पाण्डे) के प्रकाशन ने स्थानीय आक्रामकता और भारतीय राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया। आक्रामक लेखन के कारण इनकी प्रतियों की मांग बढ़ती जा रही थी। इस पत्र ने कुली बेगार उन्मूलन आंदोलन को 'स्वाधीनता का संग्राम' तक कहा था।[15]

इस पत्र द्वारा स्वदेशी आन्दोलनों से लेकर प्रथम विश्व युद्ध, प्रेस एक्ट, रौलट एक्ट, विभिन्न कांग्रेस अधिवेशन, जलियांवाला बाग कांड, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, द्वितीय विश्व युद्ध, भारत की स्वतन्त्रता आदि की घटनाओं को व्यापक प्रचार–प्रसार किये जाने के

फलस्वरूप दूरस्थ उत्तराखण्ड गढ़वाल की जनता को भी देश के अन्य क्षेत्रों में हो रही घटनाओं को जानने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

1922–23 में प्रखर संग्रामी तथा उत्तराखण्ड के प्रथम बैरिस्टर मुकुन्दी लाल ने 'तरूण कुमायुँ' का प्रकाशन किया और कांग्रेस का प्रचार–प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1930–33 में प्रकाशित 'स्वाधीन प्रजा' ने उत्तराखण्ड के पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इसमें स्वाधीनता पर अत्यधिक बल दिया गया। 1922 में 'जिला समाचार' नाम से प्रकाशित समाचार पत्र 1925 में 'कुमायुँकुमुद' के नाम से राष्ट्रवादी अखवार के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसमें समाजवाद, पूंजीवाद, आर्थिक समस्याओं, साम्राज्यवाद आदि विचार धाराओं पर सामान्य भाषा में प्रकाश डाला गया। साथ ही क्षेत्रीय कवियों, रचनाकारों, साहित्यकारों को स्थान देकर स्थानीय, साहित्य, संस्कृति और भाषा को प्रोत्साहित किया गया।[16] 1938 में कोटद्वार से 'संदेश' नामक सचित्र समाचार पत्र निकालकर चित्रों द्वारा समाज पर प्रभाव डालने का प्रयास किया गया। 1939 में हल्द्वानी से 'जागृत जनता' नाम से प्रकाशित पत्र ने भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में जबरदस्ती शामिल किये जाने का विरोध किया। लैंसडाउन से प्रकाशित 'कर्मभूमि' नामक पत्र ने ब्रिटिश गढ़वाल के साथ–2 टिहरी गढ़वाल में भी चेतना फैलाने का प्रयास किया। 1947 में देहरादून से प्रकाशित 'युगवाणी' नामक पत्र ने टिहरी के अंतिम संघर्ष और वहां की अभिव्यक्ति को व्यापक मंच दिया और भारत को मिल रही आजादी को 'भारतीय स्वतन्त्रता का अरूणोदय' कहा। यह आज भी मासिक पत्रिका के रूप में सम्मानजनक स्थिति बनाये हुए है। 1948 में मसूरी से प्रकाशित 'हिमाचल' साप्ताहिक पत्र ने टिहरी रियासत की समस्याओं पर अंतिम संघर्ष को अभिव्यक्ति दी। 1947 के रानीखेत से प्रकाशित 'प्रजाबंधु' नामक पत्र में क्षेत्रीय समस्या के साथ–2 राष्ट्रीय समाचार भी छपते थे। 1934 में अल्मोड़ा से प्रकाशित 'समता' नामक पत्र दलित पत्रकारिता के देशव्यापी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें जातिगत भेदभाव, अछूतों का मंदिर प्रवेश, सेना में भर्ती, पानी की समस्या, साफ–सफाई, डोला पालकी समस्या, अछूतोद्धार, भूमि समस्या, शिक्षा, दलित बस्तियों को बसाना आदि विषयों को बार–बार उठाकर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के आरम्भ से निरन्तर प्रवाह को देखते हुए ज्ञात होता है कि यहाँ की अधिकांशतः पत्रकारिता भारत में चले राष्ट्रीय आन्दोलनों का पर्याय रही जिसने आंचलिक या क्षेत्रीय भावनाओं का पूर्णतः प्रभावित किया। उत्तराखण्ड के अधिकांशतः पत्रों के संपादक–संचालक, शहरी, शिक्षित, मध्यमवर्गीय चेतनायुक्त क्षेत्रीय समस्यओं से भली–भांति परिचित थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के विभिन्न आंदोलनों से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े थे और इसलिए उन्होंने क्षेत्रीय समस्याओं को आन्दोलन का रूप देकर उजागर करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सांस्कृत्यायन, राहुल 1953 कुमायुँ पृ0 37, गढ़वाल पृ0 72 इलाहाबाद।
- जोशी, धनश्याम 2003 उत्तरांचल का रा. सा. एवं सा. इतिहास पृ0 104 बरेली।
- पाठक, शेखर पहाड़।
- गढ़वाल गजट पृ0 2, नैनीताल गजट पृ0 137
- डबराल, विनय (लेख), मौलाराम, पहाड़ व पृ0 112। भट्ट, दया 1990, पृ0 10। पाण्डेय, त्रिलोचन, 1977 कुमाऊँनी भाषा और उसका साहित्य पृ0 1216 लखनऊ।

- पांडे, बद्रीदत्त, कुमायुँ का इतिहास अल्मोड़ा 1990 पृ0 456
- ब्रहमानंद 1986, भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन और उ0प्र0 में हिन्दी पत्रकारिता दिल्ली पृ0 32।
- धस्माना, योगेश, उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास पृ0 55, देहरादून।
- पाठक, शेखर पहाड़ 10 पृ0 347–348, 1999, नैनीताल।
- तूंज ।ण्ण्ए ळंतींस भ्पउंसंलं दृ । भ्पेजवतपबंस च्मतेचमबजपअम 257ए छंपदपजंसण
- गढ़वाल समाचार भाग 11, अंक 10 1914
- धस्माना, योगेश, उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास पृ0 56, देहरादून।
- शर्मा, भुवनचंद औपनिवेशक उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास पृ0 241
- धस्माना, योगेश, उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास पृ0 59, देहरादून।
- शक्ति 22 मार्च , 1921
- शर्मा, भुवनचंद औपनिवेशक उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास पृ0 246

Copyright © 2017 *Dr. Ranjana Rawat*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.